RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
**Refreed Journal**

# रासो

## अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17, अंक-4, सितम्बर अक्टूबर नवम्बर 2004

रासो
त्रैमासिक शोध पत्रिका
2005
॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम् ॥

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
**Refreed Journal**

# रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17 अंक - 4 सितम्बर-अक्टूबर-नवम्बर-2024

**सम्पादक**
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

**निदेशक**
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

**संरक्षक**

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

**सलाहकार मण्डल**

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
**डॉ. रीता पारीक**
*प्राचार्य*
*हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर*

☆ प्रबन्ध सम्पादक
**डॉ. मृत्युंजय शर्मा**
*सह-आचार्य*
*हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर*

☆ सहायक सम्पादक
**डॉ. निष्काम शर्मा**

☆ शब्द संयोजन
**मुकेश कुमार माहेश्वरी**

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
**सृजन संस्थान,**
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
**पुष्पा शर्मा**
**सृजन संस्थान,**
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
**मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,**
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
**श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स**
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

**सहयोग दर**

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में छात्रों में आर्थिक चिंतन के प्रति जागरण के प्रावधान

*भावना जैन*
*सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)*
*हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर*

आज के समय में आर्थिक जागरूकता छात्रों के लिए केवल एक अतिरिक्त कौशल नहीं रही; यह उनकी शिक्षा और जीवन का अनिवार्य अंग बन गई है। वैश्विक और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में तेजी से हो रहे बदलाव, डिजिटल वित्तीय प्लेटफ़ॉर्म, उद्यमिता के अवसर और बाजार की जटिलताएँ यह आवश्यक बनाती हैं कि छात्र व्यावहारिक आर्थिक निर्णय लेने, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने और आर्थिक जोखिमों का मूल्यांकन करने में सक्षम हों। इसी संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) ने आर्थिक शिक्षा और छात्रों में आर्थिक चिंतन विकसित करने को शिक्षा का एक केंद्रीय उद्देश्य माना है।

NEP-2020 का दृष्टिकोण यह है कि आर्थिक शिक्षा केवल वित्तीय ज्ञान या व्यवसायिक कौशल तक सीमित न रहे, बल्कि इसे छात्रों के जीवन कौशल, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक सोच का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। नीति में आर्थिक शिक्षा को पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों दोनों के माध्यम से सुदृढ़ करने पर बल दिया गया है। पाठ्यक्रम में बजट योजना, निवेश, कर और कर नीति, वित्तीय साक्षरता, उद्यमिता और सामाजिक अर्थशास्त्र जैसे विषय शामिल हैं। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान न प्राप्त करें, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन में आर्थिक निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान खोजने और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने के लिए तैयार किया जाए।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, जैसे उद्यमिता क्लब, परियोजना आधारित अधिगम, खेल आधारित प्रशिक्षण और डिजिटल वित्तीय प्लेटफ़ॉर्म, छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्र बजट प्रबंधन, निवेश, वित्तीय योजना, जोखिम प्रबंधन और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसी क्षमताओं का अभ्यास करते हैं। इससे उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता, रणनीतिक सोच, संकट प्रबंधन और निर्णय लेने की योग्यता मजबूत होती है।

नीति के अनुसार, आर्थिक शिक्षा केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं रहती। यह छात्रों में सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करती है। छात्र अपने आर्थिक निर्णयों के समाज और राष्ट्र पर पड़ने वाले प्रभाव को समझते हैं और इस प्रकार उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर होते हैं। इस दृष्टिकोण से आर्थिक जागरूकता शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य घटक बन जाती है, जो छात्रों को केवल व्यक्तिगत विकास के लिए ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक कल्याण में योगदान देने के लिए भी प्रेरित करती है।

**शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।**

भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में भी आर्थिक और व्यावहारिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। उदाहरण स्वरूप, कौटिल्य का अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को राज्य प्रबंधन, कर नीति, उत्पादन, व्यापार, वित्तीय प्रबंधन और आर्थिक नीति निर्धारण जैसी विषयवस्तु से परिचित कराता था। इसमें न केवल सैद्धांतिक ज्ञान दिया गया, बल्कि छात्रों को व्यावहारिक रणनीति, नेतृत्व और निर्णय क्षमता विकसित करने की दिशा में मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया। NEP-2020 इसी परंपरा को आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्जीवित करती है और आर्थिक शिक्षा को छात्रों की समग्र शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) में आर्थिक शिक्षा के प्रावधान छात्रों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने की दृष्टि से व्यापक रूप से परिभाषित किए गए हैं। नीति का उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहकर, छात्रों में व्यावहारिक जीवन कौशल, सामाजिक जागरूकता, नागरिक जिम्मेदारी और आर्थिक साक्षरता विकसित करना है। आर्थिक शिक्षा के प्रावधान छात्रों को व्यक्तिगत, सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर पर व्यावहारिक और जिम्मेदार आर्थिक निर्णय लेने में सक्षम बनाते हैं। यह शिक्षा केवल व्यवसाय या अर्थशास्त्र तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निवेश, बजट योजना, कर नीति, वित्तीय प्रबंधन, उद्यमिता और सामाजिक आर्थिक संदर्भों का समावेश किया गया है।

**पाठ्यक्रम का निर्धारण :**

नीति के अनुसार पाठ्यक्रम में आर्थिक शिक्षा को एक अभिन्न अंग के रूप में शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान न प्राप्त करें, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन में आर्थिक निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता विकसित हो।

**(1) वित्तीय साक्षरता** :- वित्तीय साक्षरता के अंतर्गत छात्रों को व्यक्तिगत वित्तीय प्रबंधन, बजट निर्धारण, खर्च और बचत के महत्व, निवेश के विकल्प, ऋण प्रबंधन और वित्तीय जोखिमों का मूल्यांकन सिखाया जाएगा। यह उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और विवेकपूर्ण आर्थिक निर्णय लेने की दिशा में तैयार करता है।

**कर और कर नीति की समझ** :- कर और कर नीति की समझ के माध्यम से छात्रों को कर प्रणाली, करों के प्रकार, कर भुगतान और कर नीतियों के महत्व से परिचित कराया जाएगा। इससे छात्र अपने नागरिक दायित्वों को समझेंगे और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक होंगे।

**व्यावसायिक और उद्यमशीलता की शिक्षा** :- व्यावसायिक और उद्यमशीलता शिक्षा में छात्रों को उद्यमिता, व्यापार प्रबंधन, मार्केटिंग और आर्थिक नवाचार के लिए तैयार किया जाएगा। स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर उद्यमिता क्लब और परियोजना आधारित अधिगम के माध्यम से छात्रों में व्यावहारिक आर्थिक कौशल और रणनीतिक सोच विकसित की जाएगी।

**सामाजिक और राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के प्रावधान** :- सामाजिक और राष्ट्रीय अर्थशास्त्र के प्रावधान के अंतर्गत छात्रों को समाज और राष्ट्र के आर्थिक तंत्र, विकासशील और विकसित अर्थव्यवस्था में अंतर, आर्थिक नीतियों और उनके प्रभाव की जानकारी दी जाएगी। इससे छात्रों में सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और राष्ट्र के आर्थिक विकास के प्रति समझ विकसित होगी।

**आर्थिक नीति और निर्णय क्षमता** :- आर्थिक नीति और निर्णय क्षमता के माध्यम से छात्रों

को नीति निर्माण और निर्णय प्रक्रिया की मूलभूत समझ प्राप्त होगी। इससे उनकी रणनीतिक सोच, समस्या समाधान और व्यावहारिक निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होगी।

**सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में आर्थिक शिक्षा :**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) में पाठ्यक्रम के अतिरिक्त सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक शिक्षा को व्यवहारिक रूप में लागू करने पर विशेष जोर दिया गया है। नीति का उद्देश्य छात्रों को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखना है, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में आर्थिक निर्णय लेने, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने और सामाजिक जिम्मेदारी का अनुभव करने के अवसर प्रदान करना है।

**उद्यमिता क्लब और परियोजना आधारित अधिगम** :- उद्यमिता क्लब और परियोजना आधारित अधिगम के माध्यम से छात्रों को स्कूल या कॉलेज स्तर पर छोटे व्यवसाय, स्टार्टअप, वित्तीय योजना और बजट प्रबंधन जैसे व्यावहारिक अनुभव प्राप्त होते हैं। ये क्लब छात्रों को व्यवसायिक सोच, जोखिम मूल्यांकन, योजना निर्माण और नवाचार के अवसर प्रदान करते हैं, जिससे उनकी उद्यमशीलता और रणनीतिक क्षमता विकसित होती है।

**डिजिटल वित्तीय प्लेटफॉर्म** :- डिजिटल वित्तीय प्लेटफ़ॉर्म के प्रयोग से छात्रों को ऑनलाइन बैंकिंग, निवेश सिमुलेशन और डिजिटल वित्तीय उपकरणों का व्यावहारिक अनुभव मिलता है। यह उन्हें आधुनिक आर्थिक परिवेश में सक्रिय भूमिका निभाने, डिजिटल वित्तीय साक्षरता हासिल करने और आत्मनिर्भर आर्थिक निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।

**सामुदायिक आर्थिक परियोजनाएँ** :- सामुदायिक आर्थिक परियोजनाओं के माध्यम से छात्र स्थानीय समुदाय में छोटे वित्तीय और सामाजिक परियोजनाओं में शामिल होते हैं, जैसे सामुदायिक बजट, निवेश योजना और सामाजिक उद्यमिता। इन अनुभवों के माध्यम से छात्र केवल आर्थिक निर्णय लेने की तकनीकी क्षमता ही नहीं विकसित करते, बल्कि समाज और समुदाय के प्रति नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी का गहन अनुभव भी प्राप्त करते हैं।

**खेल और आर्थिक शिक्षा** :- खेल और आर्थिक शिक्षा का समन्वय छात्रों में संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, रणनीतिक योजना, टीम वर्क और नेतृत्व क्षमता को विकसित करने का एक प्रयोगात्मक माध्यम प्रदान करता है। टीम गतिविधियों, खेल प्रतियोगिताओं और सह-पाठ्यक्रम अभियानों के जरिए छात्र निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान खोजने और रणनीतिक सोच लागू करने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं। NEP-2020 इन गतिविधियों को आर्थिक शिक्षा का प्रभावी और प्रयोगात्मक माध्यम मानती है, जिससे छात्रों की आर्थिक समझ और व्यावहारिक कौशल दोनों में संतुलित विकास होता है।

**शिक्षक और प्रशिक्षण :**

NEP-2020 में आर्थिक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षक और उनके प्रशिक्षण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। नीति यह मानती है कि आर्थिक साक्षरता और व्यावहारिक कौशल केवल छात्रों को पढ़ाने तक सीमित नहीं रह सकते; इसके लिए शिक्षक को भी पर्याप्त प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्राप्त होना आवश्यक है।

शिक्षकों को वित्तीय साक्षरता, बजट योजना, निवेश, उद्यमिता और अन्य व्यावहारिक आर्थिक पहलुओं में प्रशिक्षित किया जाएगा। यह प्रशिक्षण सुनिश्चित करता है कि शिक्षक न केवल सैद्धांतिक ज्ञान समझें, बल्कि उसे वास्तविक जीवन में लागू करने के तरीके भी जानें। प्रशिक्षित शिक्षक छात्रों को आर्थिक विचारों और नैतिक मूल्यों को समझाने में सक्षम होंगे, जिससे छात्र केवल लाभकारी निर्णय लेने तक सीमित न रहकर समाज और राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक संदर्भ को भी समझ सकें।

इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षित शिक्षक छात्रों में निर्णय क्षमता, जोखिम प्रबंधन और समस्या समाधान कौशल विकसित करने में मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। शिक्षक छात्रों को बजट योजना, निवेश, वित्तीय जोखिमों का मूल्यांकन और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसे व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सिखाएंगे। इस प्रकार, शिक्षक न केवल ज्ञान देने का माध्यम बनते हैं, बल्कि आर्थिक सोच, नैतिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक कौशल के विकास में मार्गदर्शक के रूप में कार्य करेंगे।

**डिजिटल और तकनीकी उपकरण :**

NEP-2020 में डिजिटल और तकनीकी उपकरणों का प्रयोग आर्थिक शिक्षा को प्रभावी और व्यापक बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है। नीति डिजिटल माध्यमों के उपयोग को प्रोत्साहित करती है ताकि छात्रों को आर्थिक ज्ञान केवल सैद्धांतिक रूप में ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक और अनुभवात्मक रूप में भी उपलब्ध हो सके।

इस दिशा में ऑनलाइन मॉड्यूल, सिमुलेशन, गेमिफिकेशन और इंटरैक्टिव प्लेटफ़ॉर्म जैसे उपकरण शामिल किए गए हैं। इन उपकरणों के माध्यम से छात्र विभिन्न आर्थिक स्थितियों और निर्णयों का सैद्धांतिक और व्यावहारिक मूल्यांकन कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप, निवेश सिमुलेशन के द्वारा छात्र वास्तविक जीवन के निवेश विकल्पों और उनके जोखिमों का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, जबकि बजट प्रबंधन सिमुलेशन उन्हें संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और वित्तीय योजना बनाने की क्षमता प्रदान करता है।

डिजिटल माध्यमों के प्रयोग से आर्थिक शिक्षा न केवल अधिक समावेशी और व्यापक बनती है, बल्कि इसे छात्रों तक आसान और पहुंच योग्य भी बनाया जा सकता है। इससे दूरदराज के स्कूलों और कम संसाधन वाले क्षेत्रों के छात्र भी आधुनिक आर्थिक ज्ञान और वित्तीय कौशल से सशक्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म छात्रों में इंटरैक्टिव सीखने की आदत, समस्या समाधान की क्षमता और तकनीकी दक्षता को भी बढ़ावा देते हैं।

**छात्रों पर प्रभाव :**

NEP-2020 के आर्थिक शिक्षा प्रावधानों का प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। नीति के पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल उपकरणों के संयोजन के माध्यम से छात्रों में कई महत्वपूर्ण क्षमताएँ विकसित होती हैं।

सबसे पहले, छात्रों में व्यावहारिक वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती है। वे बजट योजना, निवेश, ऋण प्रबंधन और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग जैसी गतिविधियों के माध्यम से वास्तविक जीवन की आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने और समझदारी से निर्णय लेने में सक्षम हो जाते हैं।

दूसरे, नीति के उद्यमिता और परियोजना आधारित अधिगम प्रावधानों के कारण छात्रों में नवाचार,

व्यवसायिक सोच और उद्यमिता के कौशल विकसित होते हैं। ये कौशल उन्हें न केवल आर्थिक अवसरों की पहचान करने, बल्कि जोखिम का मूल्यांकन करने और नए समाधान विकसित करने की क्षमता भी प्रदान करते हैं।

तीसरे, सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होती है। आर्थिक शिक्षा छात्रों को यह समझने में मदद करती है कि उनके व्यक्तिगत आर्थिक निर्णय केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि समाज और समुदाय के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। इससे वे उत्तरदायी और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर होते हैं।

चतुर्थ, छात्रों में संकट प्रबंधन और रणनीतिक सोच की क्षमता भी विकसित होती है। विभिन्न आर्थिक परिदृश्यों का अभ्यास, निर्णय लेने के मॉडल और टीम आधारित गतिविधियाँ उन्हें जटिल परिस्थितियों में प्रभावी रणनीति बनाने और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाती हैं।

**पाठ्यक्रम और सह पाठ्यक्रम समावेशन :**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) में पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर इसे व्यावहारिक, जीवनोपयोगी और समग्र बनाने पर विशेष जोर दिया गया है। नीति का उद्देश्य छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, निर्णय क्षमता और व्यवहारिक समझ विकसित करना है, जिससे वे व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदार निर्णय लेने में सक्षम हों।

पाठ्यक्रम में समावेश को बहु-विषयक और लचीला बनाया गया है, ताकि छात्र विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकें। आर्थिक शिक्षा, नागरिक बोध और जीवन कौशल जैसे विषय गणित, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन और व्यावसायिक शिक्षा के साथ जोड़े गए हैं। स्कूल स्तर पर बजट बनाना, बचत का महत्व, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, उपभोक्ता अधिकार और सरल आर्थिक अवधारणाएँ पाठ्यक्रम का हिस्सा बनती हैं। उच्च शिक्षा में अर्थशास्त्र, प्रबंधन, उद्यमिता और सार्वजनिक नीति जैसे विषय बहु-विषयक दृष्टिकोण से पढ़ाए जाते हैं, जिससे छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक दृष्टि भी प्राप्त होती है। परियोजना आधारित अधिगम, केस स्टडी और स्थानीय आर्थिक संदर्भों का अध्ययन छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ने का प्रयास करता है।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ छात्रों में व्यवहारिक अनुभव और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने का सशक्त माध्यम हैं। NEP-2020 में उद्यमिता क्लब, वित्तीय साक्षरता कार्यशालाएँ, मॉक संसद, छात्र परिषद, एनसीसी, एनएसएस और सामुदायिक सेवा जैसी गतिविधियों को विशेष महत्व दिया गया है। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्र नेतृत्व, सहयोग, योजना निर्माण और निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करते हैं। उद्यमिता क्लब में छात्र छोटे व्यवसाय मॉडल तैयार करना, लागत-लाभ विश्लेषण और विपणन रणनीति सीखते हैं। मॉक संसद और छात्र परिषद के माध्यम से उन्हें नीति निर्माण और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की समझ मिलती है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और ऑनलाइन सिमुलेशन भी सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं, जिससे छात्रों में डिजिटल साक्षरता और आधुनिक आर्थिक समझ विकसित होती है।

NEP-2020 के आर्थिक शिक्षा और वित्तीय साक्षरता प्रावधानों का छात्रों के आर्थिक चिंतन पर

गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आर्थिक चिंतन केवल धन कमाने की समझ नहीं है, बल्कि इसमें संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, भविष्य की योजना, जोखिम का आकलन, सामाजिक-आर्थिक जिम्मेदारी और नैतिक निर्णय शामिल हैं। सबसे पहला प्रभाव छात्रों में वित्तीय साक्षरता के विकास के रूप में दिखाई देता है। बजट निर्माण, बचत, निवेश, कर प्रणाली और डिजिटल लेन-देन जैसी अवधारणाओं से परिचित होने पर छात्र अपने व्यक्तिगत वित्त को समझदारी से संचालित करना सीखते हैं, अनावश्यक खर्च से बचते हैं और भविष्य के लिए योजना बनाना सीखते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव निर्णय लेने की क्षमता पर पड़ता है। आर्थिक शिक्षा छात्रों को लाभ-हानि का विश्लेषण, अवसर लागत और दीर्घकालिक प्रभावों को समझने में सक्षम बनाती है। वे भावनात्मक नहीं, बल्कि तर्कसंगत और तथ्य आधारित निर्णय लेना सीखते हैं, जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी उपयोगी होता है। तीसरा प्रभाव उद्यमशीलता और नवाचार की भावना के रूप में दिखाई देता है। ह्श्वक्क-2020 में स्टार्टअप संस्कृति, व्यावसायिक शिक्षा और परियोजना आधारित अधिगम को बढ़ावा दिया गया है, जिससे छात्र केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि रोजगार सृजनकर्ता बनने की दिशा में सोचते हैं। छोटे व्यवसाय मॉडल, स्टार्टअप योजनाएँ और सामाजिक उद्यमिता छात्रों को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

चौथा प्रभाव सामाजिक और नैतिक आर्थिक दृष्टिकोण के रूप में सामने आता है। आर्थिक चिंतन केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं रहता, बल्कि छात्र समाज, पर्यावरण और राष्ट्र की आर्थिक स्थिति के प्रति संवेदनशील बनते हैं। गरीबी, असमानता, संसाधनों का न्यायसंगत वितरण और सतत विकास जैसे मुद्दों की समझ उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाती है। अंततः, आर्थिक चिंतन छात्रों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को भी बढ़ाता है। जब छात्र वित्तीय निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होते हैं, तो उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है और वे भविष्य की अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहते हैं।

निष्कर्षतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) छात्रों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है और आर्थिक शिक्षा को अनिवार्य जीवन कौशल के रूप में महत्व देती है। नीति के माध्यम से छात्रों को वित्तीय साक्षरता, बजट प्रबंधन, निवेश, कर प्रणाली, उद्यमिता और सामाजिक अर्थशास्त्र की समझ दी जाती है, जिससे वे वास्तविक जीवन की आर्थिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनते हैं। पाठ्यक्रम और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, जैसे उद्यमिता क्लब, परियोजना आधारित अधिगम और डिजिटल वित्तीय प्लेटफ़ॉर्म, छात्रों में विश्लेषणात्मक सोच, रणनीतिक योजना, समस्या समाधान, नेतृत्व, टीमवर्क और नवाचार कौशल विकसित करते हैं।

NEP-2020 आर्थिक शिक्षा को सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से जोड़ती है, जिससे छात्र अपने व्यक्तिगत वित्तीय निर्णयों के समाज, पर्यावरण और राष्ट्र पर प्रभाव को समझते हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व, निष्पक्षता और सतत विकास के प्रति संवेदनशील बनते हैं। शिक्षक प्रशिक्षण और डिजिटल संसाधनों का उपयोग इसे और प्रभावी बनाता है। नीति का सही क्रियान्वयन छात्रों को आर्थिक रूप से साक्षर, नैतिक रूप से जागरूक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाने में सक्षम है और इससे भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास में दीर्घकालिक सकारात्मक योगदान की संभावना बढ़ती है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. *भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली*
2. *एनसीईआरटी (2021), आर्थिक और वित्तीय शिक्षा: दृष्टिकोण और कार्यान्वयन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली*
3. *डॉ. रामेश सिंह (2022), NEP-2020 और वित्तीय साक्षरता, मैकग्रॉ हिल एजुकेशन, नई दिल्ली*
4. *डॉ. एस.के. बग्गा (2018), वित्तीय साक्षरता और व्यक्तिगत वित्त प्रबंधन, टैक्समैन पब्लिशर्स, नई दिल्ली*
5. *रमेश्वर प्रसाद (2019), व्यक्तिगत वित्त और निवेश शिक्षा, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली*
6. *एनसीईआरटी (2017), व्यावसायिक शिक्षा और उद्यमिता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली*
7. *डॉ. अरविंद सिंह (2020), उद्यमिता विकास और स्टार्टअप संस्कृति, एडिसन पब्लिशर्स, नई दिल्ली*
8. *कौटिल्य (आधुनिक संस्करण 1969), अर्थशास्त्र (आर्थिक नीति और प्रशासन), मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली*
9. *डॉ. एम.सी. वर्मा (2016), भारतीय अर्थव्यवस्था और नीति निर्माण, सूर्या प्रकाशन, मेरठ*
10. *SEBI (2022), वित्तीय शिक्षा हैंडबुक, सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया, मुंबई*
11. *RBI (2019), Financial Literacy Handbook for Students, Riserve Bank of India, Mumbai*
12. *डॉ. प्रीति गुप्ता (2021), बजट प्रबंधन और वित्तीय योजना, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*